Sangitashram (संगीताश्रम)

(प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से सम्बद्ध)

चतुर्थ वर्ष (गायन)

Theory – 50 Marks

१. गीत के प्रकार - टप्पा, ठुमरी, तराना, तिरवट, चतुरंग, भजन, गीत तथा ग़ज़ल का विस्तृत वर्णन। राग- रागिनी पद्धति, आधुनिक आलाप - गायन की विधि, तान के विविध प्रकारों का वर्णन, विवादी स्वर का प्रयोग, निबद्ध गान के प्राचीन प्रकार (प्रबन्ध, वस्तु आदि), धातु, अनिबद्ध गान, अध्वदर्शक स्वर।

२. २२ श्रुतियों का स्वरों में विभाजन (आधुनिक और प्राचीन मतों का तुलनात्मक अध्ययन), खिंचे हुए तार की लम्बाई का नाद के ऊँचे - नीचेपन से सम्बन्ध।

३. छायालय और संकीर्ण राग, परमेल प्रवेशक राग, रागों का समय चक्र, राग का समय निश्चित करने में अध्वदर्शक स्वर, वादी - सम्वादी और पूर्वांग - उत्तरांग का महत्व, दक्षिणी और उत्तरी संगीत पद्धतियों के स्वरों की तुलना।

४. उत्तर भारतीय सप्तक के स्वरों से ३२ थाटों की रचना, आधुनिक थाटों के प्राचीन नाम, तिरोभाव - आविर्भाव और अल्पत्व- बहुत्व।

५. रागों का सूक्ष्म तुलनात्मक अध्ययन तथा राग पहचान।

६. विष्णु दिगम्बर तथा भातखंडे दोनों स्वरलिपियों का तुलनात्मक अध्ययन। गीतों को दोनों स्वरलिपियों में लिखने का अभ्यास। धमार और ध्रुपद की दुगुन, तिगुन और चौगुन स्वरलिपि में लिखने का पूर्ण अभ्यास।

७. भरत, अहोबल, ब्यंकटमखी तथा मानसिंह तोमर का जीवन चरित्र तथा इनके संगीत कार्यों का विवरण।

८. पाठ्यक्रम के सभी तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन प्रारम्भ करने का स्थान गणित द्वारा निकालने की विधि। दुगुन, तिगुन तथा चौगुन के अतिरिक्त अन्य विभिन्न लयकारियों को तालिपि में लिखने का अभ्यास।

Practical – 100 Marks

१. स्वर ज्ञान का विशेष अभ्यास। कठिन स्वर समूहों को गाने तथा पहचानने का ज्ञान।

२. तानपुरा और तबला मिलाने का विशेष ज्ञान।

३. अंकों तथा स्वरों के सहारे ताल देकर निम्नलिखित लयों का प्रदर्शन -
दुगुन (१ मात्रा में दो मात्रा बोलना), तिगुन (१ में ३), चौगुन (१ में ४), आड़ (२ में ३), आड़ का उल्टा (३ में २), पौनगुन (४ में ३) तथा सवागुन (४ में ५) मात्राओं का प्रदर्शन।

४. कठिन और सुन्दर आलाप एवं तानों का अभ्यास।

५. देशकार, शंकरा, जयजयवन्ती, कामोद, मारवा, मुल्तानी, सोहनी, बहार तथा पूर्वी रागों में एक - एक विलम्बित और द्रुत खयाल सुन्दर तथा कठिन आलाप, तान तथा बोलतान सहित।

६. उपरोक्त रागों में से किन्हीं दो में एक - एक ध्रुपद तथा अन्य किन्हीं दो में एक - एक धमार ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन सहित। किसी एक राग में एक तराना।

७. खयाल गायकी में विशेष प्रवीणता।

८. ठुमरी और टप्पा के ठेकों का साधारण ज्ञान। आड़ा चारताल तथा जत ताल को पूर्ण रूप से बोलने का अभ्यास।

९. स्वर समूहों द्वारा राग पहचान।

१०. गाकर रागों में समता - विभिन्नता दिखाना।

Sangitashram (संगीताश्रम)

(प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से सम्बद्ध)

पंचम वर्ष (गायन)

Theory – 50 Marks

१. पिछले चतुर्थ वर्ष तक के पाठ्यक्रम का पूर्ण तथा विस्तृत अध्ययन।

२. अनिबद्ध गान के प्राचीन प्रकार - रागालाप, रूपकालाप, आलप्तिगान, स्वस्थान नियम, बिदारी, राग लक्षण, जाति गायन और उसकी विशेषताएँ, सन्यास, विन्यास, गायकी, नायकी, गांधर्व, गीत (देशी, मार्गी)। पाठ्यक्रम के रागों में तिरोभाव - आविर्भाव और अल्पत्व - बहुत्व दिखाना।

३. श्रुति-स्वर विभाजन के संबंध में सम्पूर्ण इतिहास का तीन मुख्य कालों में विभाजन (प्राचीन, मध्य और आधुनिक), इन तीन कालों के ग्रंथकारों के ग्रंथ और उनमें वर्णित मतों में साम्य और भेद। षडज - पंचम भाव और आंदोलन संख्या तथा तार की लम्बाई का संबंध, किसी स्वर की आंदोलन संख्या दी हुई हो तो तार की लम्बाई निकालना (जबकि षडज की दोनों वस्तुएँ दी हुई हो), इसी प्रकार तार की लम्बाई दी हुई हो तो आंदोलन संख्या निकालना, मध्यकालीन पण्डितों और आधुनिक पण्डितों के शुद्ध और विकृत स्वरों के स्थानों की तुलना उनके तार की लम्बाई की सहायता से करना।

४. विभिन्न रागों में सरल तालों के सरगम मन से बनाना।

५. इस वर्ष के रागों का विस्तृत अध्ययन तथा उनसे मिलते जुलते रागों का मिलान, रागों में अलपत्व - बहुत्व, तिरोभाव - आविर्भाव दिखाना।

६. इस वर्ष के तालों का पूर्ण परिचय तथा उनके ठेकों की विभिन्न लयकारियाँ ताल लिपि में दिखाना। गणित द्वारा किसी गीत या ताल की दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़ आदि प्रारंभ करने का स्थान निश्चित करना।

७. गीत और उनकी दुगुन, तिगुन और चौगुन लयकारियों को स्वरलिपि में लिखना।

८. निबंध - राग और रस, संगीत और अन्य ललित कलाएँ, संगीत और कल्पना, यवन संस्कृति का हिन्दुस्तानी संगीत पर प्रभाव, संगीत और उसका भविष्य, संगीत में वाद्यों का स्थान, लोक संगीत इत्यादि।

९. गीतों और तालों को किसी भी स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास।

१०. श्रीनिवास, रामामात्य, हृदयनारायण देव, मोहम्मद रजा, अदारंग का जीवन परिचय तथा संगीत कार्य।

Practical – 100 Marks

१. कुछ कठिन लयकारियों को ताली देकर दिखाना - जैसे २ मात्रा में ३ मात्रा बोलना और ३ मात्रा में ४ मात्रा बोलना इत्यादि।

२. नोम.तोम के आलाप का विशेष अभ्यास।

३. पूरिया, गौड़मल्हार, छायानट, श्री, हिंडोल, गौड़सारंग, विभास, दरबारी कान्हड़ा, तोड़ी, अड़ाना इन रागों में एक एक विलम्बित तथा द्रुत ख्याल पूर्णतया सुन्दर गायकी के साथ। किसी दो रागों में एक -एक धमार और किसी दो में एक .एक ध्रुपद जिसमें दुगुन, तिगुन, चौगुन और आड़ करना आवश्यक है।

४. रागों का सूक्ष्म अध्ययन। रागों में अविर्भाव - तिरोभाव का क्रियात्मक प्रयोग।

५. सवारी (पंचम), गजझंपा, अद्धा, मत्त, पंजाबी तालों का पूर्ण ज्ञान और उन्हें ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन की लयकारियों में ताली देकर बोलना।

६. तीनताल, झपताल, चारताल, एकताल, कहरवा तथा दादरा तालों को तबले पर बजाने का साधारण अभ्यास।

Sangitashram (संगीताश्रम)

(प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से सम्बद्ध)

षष्ठ वर्ष (गायन)

Theory – 200 Marks (100 Marks for each paper)

प्रथम प्रश्न पत्र

१. प्रथम से षष्टम वर्ष तक के सभी रागों का विस्तृत, तुलनात्मक और सूक्ष्म अध्ययन। आलाप, तान आदि स्वरलिपि में लिखने का पूर्ण ज्ञान। समप्रकृतिक रागों में समता - विभिन्नता का ज्ञान।

२. सभी रागों में अल्पत्व - बहुत्व, अन्य रागों की छाया आदि दिखाते हुए आलाप, तान स्वरलिपि में लिखना।

३. कठिन लिखित स्वर समूहों द्वारा राग पहचान।

४. दिये गये रागों में सरगम बनाना। दी हुई कविता को राग में तालबद्ध करना।

५. गीतों को स्वरलिपि में लिखना। धमार और ध्रुपद को दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़ आदि लयकारियों में लिखना।

६. ताल के बोल को विभिन्न लयकारियों में लिखना।

७. लेख - जीवन में संगीत की आवश्यकता, आलाप विधि, महफिल की गायकी, शास्त्रीय संगीत का जनता पर प्रभाव, रेडियो और सिनेमा संगीत, पृष्ट संगीत, हिन्दुस्तानी संगीत और वृन्दवादन, हिन्दुस्तानी संगीत की विषेशताएँ, स्वर का लगाव, संगीत और स्वरलिपि आदि।

८. हस्सू-हद्दू खां, फैयाज खां, अब्दुल करीम खां, बड़े गुलाम अली खां, ओंकारनाथ ठाकुर का जीवन परिचय एवं कार्य।

द्वितीय प्रश्न पत्र

१. पिछले सभी वर्षों के शास्त्र संबंधित विषयों का सूक्ष्म तथा विस्तृत अध्ययन।

२. मध्यकालीन तथा आधुनिक संगीतज्ञों के स्वर स्थानों की आंदोलन संख्या की सहायता से तथा तार की लम्बाई की सहायता से तुलना, पाश्चात्य स्वर सप्तक की रचना, सरल गुणांतर और शुद्ध स्वर संवाद के नियम, पाश्चात्य स्वर की आंदोलन संख्याएँ। हिन्दुस्तानी स्वरों में स्वर संवाद, कर्नाटकी ताल पद्धति और हिन्दुस्तानी ताल पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन, संगीत का संक्षिप्त क्रमिक इतिहास, ग्राम, मूर्च्छना, मूर्च्छना और आधुनिक थाट, कलावंत, पंडित, नायक, गायक, वाग्यकार, बानी (खंडार, डागुर, नौहार, गौवरहार), गीत, गीत के प्रकार, गमक के प्रकार, वाद्य के प्रकार।

(क्रमशः)

३. निम्नलिखित विषयों का ज्ञान - तानपुरे में उत्पन्न होने वाले सहायक नाद, पाश्चात्य स्वर सप्तक का समान स्वरांतर सप्तक में परिवर्तित होने के कारण और विवरण, मेजर, माइनर और सेमीटोन, पाश्चात्य आधुनिक स्वरों के गुण - दोष, हारमोनियम पर एक आलोचनात्मक दृष्टि, तानपुरे से निकलने वाले स्वरों के साथ हमारे आधुनिक स्वर स्थानों का मिलान। प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक राग वर्गीकरण, उनका महत्त्व और उनके विभिन्न प्रकारों की तुलना। संगीत कला और शास्त्र का परस्पर संबंध। भरत की श्रुतियाँ समान या असमान इस पर विभिन्न विद्वानों के विचार और तर्क। सारणा चतुष्ठई का अध्ययन, उत्तर भारतीय संगीत को संगीत पारिजात की देन, हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत पद्धति की तुलना उनके स्वर, ताल और रागों का मिलान करते हुए। पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का साधारण ज्ञान, संगीत के घरानों का संक्षिप्त ज्ञान, रत्नाकर के दस विधि, राग वर्गीकरण, भाषा - विभाषा आदि।

४. भातखंडे और विष्णुदिगम्बर स्वरलिपि का तुलनात्मक अध्ययन, उनमें त्रुटियाँ और उन्नति के सुझाव।

५. लेख - भावी संगीत के समुचित निर्माण के लिए सुझाव, हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के मुख्य सिद्धांत, प्राचीन और आधुनिक प्रसिद्ध संगीतज्ञों का परिचय तथा उनकी शैली, संगीत का मानव जीवन पर प्रभाव, चित्त और संगीत, स्कूलों द्वारा संगीत शिक्षा की त्रुटियाँ और उन्नति के सुझाव, संगीत और स्वर साधन।

Practical – 300 Marks (150 Marks – Moukhic & 150 Marks - Manch)

१. राग पहचान में निपुणता। अल्पत्व - बहुत्व, आविर्भाव-तिरोभाव और समता - विभिन्न्ता दिखाने के लिए पूर्व वर्षों के सभी रागों का अध्ययन।

२. गायन की तैयारी, आलाप, तानों में सफाई, प्रदर्शन में निपुणता।

३. टप्पा, ठुमरी, तिरवट और चतुरंग का परिचय तथा इनमें से किन्हीं दो गीतों की जानकारी आवश्यक।

४. रामकली, मियाँ मल्हार, परज, बसंत, रागेश्री, पूरिया धनाश्री, ललित, शुद्ध कल्याण, देसी और मालगुंजी में बड़ा खयाल और छोटा खयाल पूरी तैयारी के साथ।

५. किन्हीं दो रागों में एक - एक धमार, एक -एक ध्रुपद और एक - एक तराना।
किसी एक राग में चतुरंग (प्रथम वर्ष से षष्टम वर्ष तक के)।

६. काफी, पीलू, पहाड़ी, झिंझोटी, भैरवी, तिलंग तथा खमाज में से दो रागों में एक ठुमरी तथा किसी एक में टप्पा।

७. लक्ष्मी ताल, ब्रह्म ताल तथा रूद्र ताल का पूर्ण परिचय तथा सभी लयकारियों में हाथ से ताली देने का ज्ञान।